

**सत्कर्म पुं.** (तत्.) 1. अच्छा कर्म, धर्म या पुण्य का काम 2. अंत्येष्टि 3. प्रायश्चित्त।

**सत्कर्मा वि.** (तत्.) अच्छा कर्म करने वाला।

**सत्कला स्त्री.** (तत्.) ललित कला।

**सत्काय दृष्टि स्त्री.** (तत्.) मृत्यु के पश्चात् आत्मा, शरीर आदि के बने रहने का सिद्धांत जो बौद्धों दृष्टि में मिथ्या है।

**सत्कार पुं.** (तत्.) आदर-सम्मान, आतिथ्य, आवभगत, सेवा।

**सत्कार्य पुं.** (तत्.) अच्छा कार्य, सत्कर्म **वि.** 1. सत्कार के योग्य, सम्मान के योग्य 2. जिसकी अंत्येष्टि क्रिया की जाए।

**सत्कार्यवाद पुं.** (तत्.) कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति न मानने का सिद्धांत।

**सत्क्रिया स्त्री.** (तत्.) 1. सत्कर्म, पुण्य कर्म 2. सत्कार, आदर-सम्मान, आतिथ्य 3. अंत्येष्टि कर्म 4. किसी कार्य का आयोजन या तैयारी।

**सत्कीर्ति स्त्री.** (तत्.) उत्तम कीर्ति, सुयश, नेकनामी।

**सत्कुल पुं.** (तत्.) उत्तम कुल, अच्छा कुल **टि.** कुलीन, सद्वंश में उत्पन्न।

**सत्कृत वि.** (तत्.) 1. अच्छी तरह किया हुआ 2. पूजित, सम्मानित 3. जिसका सत्कार किया गया हो **पुं.** शिव, सम्मान, आतिथ्य, पुण्य कर्म।

**सत्कृति स्त्री.** (तत्.) 1. अच्छी कृति, उत्तम कृति, अच्छी रचना 2. पुण्य, सद्व्यवहार, आदर-सत्कार।

**सत्त पुं.** (तद्.) 1. सार तत्व, सारभाग 2. किसी पदार्थ का रस, अर्क, निचोड़ 3. किसी पदार्थ का सबसे उपयोग अंश 4. बल, शक्ति 5. सतीत्व **वि.** सत्य।

**सत्तम वि.** (तद्.) सर्वश्रेष्ठ, परम पूज्य।

**सत्तर पुं.** (तद्.) संख्यावाची शब्द, साठ से दस अधिक की संख्या।

**सत्तांतरण पुं.** (तत्.) 1. सत्ता का एक हाथ से दूसरे हाथ में जाना 2. शासक द्वारा किसी अन्य को शासन भार सौंपना 3. अधिकार, संपत्ति, भूमि, देश, राज्य को किसी दूसरे के लिए छोड़ देना।

**सत्ता स्त्री.** (तत्.) 1. अस्तित्व, हस्ती 2. शासन का अधिकार, शाकीय अधिकार 3. शक्ति, सामर्थ्य 4. जाति का एक प्रकार **पुं.** सात बूटियों वाला ताश का पत्ता।

**सत्ताधारी वि.** (तत्.) जिसके हाथ में सत्ता हो, सत्तावान **पुं.** सत्ता प्राप्त अधिकारी।

**सत्तार पुं.** (तत्.) ईश्वर का एक नाम **वि.** दोषों आदि पर परदा डालने वाला, दोषों को ढाँकने वाला।

**सत्तारूढ़ पुं.** (तत्.) जो सत्ता प्राप्त कर उसका उपयोग और पालन कर रहा हो।

**सत्तावन पुं.** (तद्.) सत्तावन की संख्या **वि.** पचास से सात अधिक।

**सत्तावाद पुं.** (तत्.) यह मत या सिद्धांत कि किसी अधिनायक या अधिनायक वर्ग के तंत्र या शासन की सभी बातें बिना किसी विरोध के मानी जानी चाहिए।

**सत्ताशास्त्र पुं.** (तत्.) वह शास्त्र जिसमें मूल सत्ता का विवेचन हो।

**सत्तू पुं.** (तत्.) भुने हुए जौ, चने आदि का आटा।

**सत्पथ पुं.** (तत्.) 1. सुमार्ग, अच्छी सड़क 2. सदाचार, अच्छा आचरण 3. उत्तम पंथ या संप्रदाय।

**सत्पात्र पुं.** (तत्.) 1. योग्य व्यक्ति, सदाचारी 2. दान आदि के लिए योग्य पात्र 3. विवाह के योग्य उत्तम वर।

**सत्पुरुष पुं.** (तत्.) भला आदमी, योग्य व्यक्ति, सदाचारी।

**सत्य पुं.** (तत्.) 1. वास्तविकता, यथार्थता, सचाई 2. यथार्थ तथ्य, वास्तविक बात 3. विष्णु, परमात्मा का एक रूप 4. ब्रह्मलोक 5. पीपल का